19. नेपाल 1990 : लोकतंत्र की स्थापना के लिए आन्दोलन

डा. आकाश गौतम *

शोध सार

प्रस्तुत शोध में नेपाल में राजशाही दौरान लोकतांत्रिक आन्दोलन का ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक पद्यतियों से अध्ययन किया गया है। नेपाल में पंचायत व्यवस्था के नाम पर निर्दलीय सीमित लोकतंत्र में राजशाही की शासन प्रणाली काम करती रही नेपाल में लोकतांत्रिक चेतना के प्रसार प्रचार में नेपाल के शिक्षित वर्ग की भूमिका रही तथा स्वाधीनता, समानता, भाईचारे, जैसे मूल्यों को आत्मसात करने में सक्षम रहा। राजनैतिक दलों और नेपाल की जनता ने समय समय पर आक्रोशित होकर लोकतंत्र की बहाली के लिए संघर्ष किया।प्रस्तुत अध्ययन में,नेपाल में लोकतांत्रिक आन्दोलन 1990,का विश्लेषण किया गया है। इस शोध लेख द्वारा लोकतांत्रिक आन्दोलन की प्रकृति को समझने में सहायता मिल सकती है।

कुंजी शब्द

राजशाही, संवैधानिक, राजतंत्र, पंचायत व्यवस्था, सामन्तवाद, संवैधानिक, लोकतांत्रिक, प्रणालिया, समाजवाद, उपनिवेशवाद, मंत्रिमंडल राजनीति।

FULL TEXT

परिचय

आधुनिक विश्व समता, स्वतंत्रता और बन्धुत्व की मांग के साथ आरम्भ होता है। स्वत्रंतता और अधिकारों की मांग सत्रहवीं शताब्दी में उभर कर आयी तथा 18वीं शताब्दी में समानता की मांग हुई। आज दुनिया में लोकतंत्र एक सर्वोच्च आदर्श के रूप में प्रतिस्थापित हो चुका है। एक राजनैतिक व्यवस्था के रूप में लोकतंत्र का अर्थ लोकतांत्रिक राज्य और सरकार से होता है। आधुनिक राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था में लोकतांत्रिक प्रकार के शासन को श्रेष्ठतम रूप में देखा जाता है। नेपाल में लोकतंत्र के लिए 1990 का आन्दोलन महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह आन्दोलन देश में बहुदलीय प्रणाली के लिए प्रारम्भ किया गया था। राजा की पंचायती प्रणाली 30 वर्षों तक चलती रही। राजनैतिक दलों और नेपाल की जनता ने समय समय पर आक्रोशित होकर उसके विरोध में संघर्ष किया।

लोकतंत्र की बहाली के लिए नेपाली कांग्रेस और साम्यवादी दलों ने एक साथ मिलकर लड़ाई लड़ी। राजा की पंचायती व्यवस्था के कारण नेपाल में असंतोष फैल चुका था। यह प्रणाली भ्रष्टाचार के कारण अनेक मुद्दों पर फेल हो चुकी थी। 1979 के मई–जून के महीने में प्रतिबंधित राजनीतिक दलों द्वारा राष्ट्रव्यापी आंदोलन शुरु किया गया। आन्दोलन के फलस्वरुप राजा ने 24 जून 1979 को नेपाल में जनमत संग्रह कराने की घोषणा की। फलस्वरुप नेपाल में नये सुधारों के साथ पंचायती व्यवस्था चलाने की कोशिश की गयी लेकिन उसको भी दस वर्ष के भीतर ही जनता और राजनीतिक दलों के आक्रोश, विरोध का कोप–भाजन होना पड़ा क्योंकि उन सुधारों से नेपाल में कोई परिवर्तन नहीं दिखाई दे रहा था। इसलिए लोकतंत्र के पक्ष में व्यापक रुप से राजनीतिक दलों और नेपाली जनता ने आन्दोलन किया।

नेपाली आन्दोलन में वहाँ की समाज व्यवस्था की भी अहम भूमिका रही है। राजा द्वारा अपनायी गयी नीति हिन्दू सामाजिक व्यवस्था से प्रेरित रही है। वहाँ राजा को विष्णु का अवतार और रानी को लक्ष्मी का रुप माना जाता था। नेपाल की शासन व्यवस्था मध्यकालीन तरीकों से संचालित की जाती रही है। नेपाली जनता नागरिक अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की जारुरत महसूस की। नेपाल में समता, स्वतंत्रता और भाईचारे के आधुनिक दृष्टिकोण का अभाव रहा है। जनता अपनी गरीबी और गुलामी को ईश्वर का दिया हुआ अभिषाप समझती थी। जाति और वर्गीय असमानता नेपाली समाज व्यवस्था में बहुत अधिक रुप में आज भी विद्यमान है। वहाँ पर प्रभु जाति के रुप में ब्राम्हण, क्षत्रिय और नेवार रहे हैं जिनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक जीवन में प्रभावशाली भूमिका रही है।

अध्ययन की आवश्यकता

लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति दुनिया के सभी देशों में जनता अपनी भागीदारी करने की कोशिश कर रही है। नेपाल के सन्दर्भ में नेपाली कांग्रेस और नेपाली साम्यवादी पार्टी का लोकतांत्रिक आन्दोलन में प्रमुख योगदान रहा है, जो नेपाली जनता की चेतना की वाहक रही है। 1990 के लोकतंत्र की स्थापना के आन्दोलन में इन दोनों दलों ने मिलकर नेपाली जनता की लड़ाई लड़ने का कार्य किया। 10 जनवरी 1990 में संयुक्त वाम मोर्चा की स्थापना सहाना प्रधान की अध्यक्षता में हुई। सहाना नेपाल के सम्मानित जन नेता दिवगंत पुष्पलाल की पत्नी थीं। संयुक्त वाम मोर्चे में अनेक दल शामिल थे, जिन्होंने मिलकर पंचायत व्यवस्था के खिलाफ नेपाली कांग्रेस के आन्दोलन को समर्थन दिया।

शोध उद्देश्य

- नेपाल में राजशाही दौरान लोकतांत्रिक आन्दोलन का ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक पद्यतियों से अध्ययन करना।

- अध्ययन में, नेपाल में लोकतांत्रिक आन्दोलन 1990, का विश्लेषण करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में नेपाल में राजशाही दौरान लोकतांत्रिक आन्दोलन का ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक पद्यतियों से अध्ययन किया गया है। नेपाल की सामाजिक–राजनीतिक उथल–पुथल और लोकतांत्रिक आंदोलन के प्रमुख कारकों का विश्लेषण किया गया हैं।नेपाल में हो रहे राजनीतिक परिवर्तनों ने राजनीतिक का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है,

नेपाली कांगेस पार्टी ने अपने 20 जनवरी 1990 के प्रेस कान्फ्रेन्स में बहुदलीय व्यवस्था के आधार पर निष्पक्ष चुनाव कराने की माँग की। गनेश मान सिंह ने माँग की "राष्ट्रीय पंचायत को भंग करके अंतरिम सरकार का गठन किया जाए"।गिरिजा प्रसाद कोइराला जो नेपाली कांग्रेस पार्टी के महासचिव थे, उन्होंने कहा कि "हमने आन्दोलन को इसलिए शुरु किया है ताकि नेपाल की अनेक समस्याओं का समाधान हो सकेगा और नेपाल में बहुदलीय व्यवस्था कायम हो सकेगी। आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य है कि नेपाल में कानून व्यवस्था और संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना हो।"इस प्रकार नेपाल के 1990 के आन्दोलन में राजनीतिक दल जिसमें नेपाली कांग्रेस पार्टी, संयुक्त वाम मोर्चा जिसमें नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी (एम0एल0) नेपाली कांग्रेस पार्टी (मननधर ग्रुप अमात्य),नेपाली कांग्रेस पार्टी (अमात्य ग्रुप),नेपाली कांग्रेसी पार्टी (वर्मा मुख्य),नेपाली कांग्रेसी पार्टी (चतुर्थ महाधिवेशन),नेपाली कांग्रेसी पार्टी (नेपाल मजदूर किसान),पार्टी (रोहित गुप्त) आदि ने भाग लेकर आन्दोलन को आम जनता तक पहुंचाकर बहुदलीय व्यवस्था की स्थापना में अपना योगदान किया। लोकतंत्र के आन्दोलन को सफल बनाने के लिए राजनीतिक दलों और संयुक्त वाम मोर्चे ने एक समन्वय समिति का निर्माण 23 दिसम्बर 1989 को किया। और उसमें निर्णय लिया गया कि आन्दोलन को 30 जनवरी 1990 से शुरु किया जायेगा। जिसको नेपाली कांग्रेस और संयुक्त लेफ्ट फ्रन्ट द्वारा मिलकर स्वीकार किया गया।

नेपाली जनता के नाम संयुक्त घोषणा में अपील जारी की गयी जिसमें जनता के मौलिक अधिकारों, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, शांतिपूर्व सभा करने की स्वतंत्रता, रैली करने के लिए सभी संगठनों पर से प्रतिबन्ध हटाने तथा लोगों को मानवाधिकार संयुक्त राष्ट्र संघ की घोषणा के अनुसार देने की बात कही गयी। संयुक्त कार्यक्रम फरवरी 18 से 29 साल पुराने प्रतिबंधित दलों को पूरे देश में झण्डा फहराने और रैली करने के लिए कहा गया। 19 फरवरी को 'नेपाल बन्द' करने का कार्यक्रम रखा गया जिसमें यातायात, शिक्षण संस्थान, औद्योगिक प्रतिष्ठान, फैक्टरी और दुकानों को बन्द रखने को कहा गया था। 25 फरवरी को नेपाल दिवस मनाने का कार्यक्रम था जिसमें काला झण्डा, काला फीता बाँधना तथा सभा करना शामिल था। मार्च 2 को पुनः 'नेपाल बन्द' का कार्यक्रम रखा गया था।

9 फरवरी 1990 की कृष्ण प्रसाद भट्टराई और सहाना प्रधान के हस्ताक्षर से जारी संयुक्त अपील का जनता के ऊपर व्यापक रुप से प्रभाव पड़ा और आन्दोलन के लिए आडियों, वीडियो, कैसेट से पूरे देश में प्रचार किया गया। इसमें भारतीय नेताओं का भी संदेश नेपाल की जनता को प्राप्त हुआ। लोकतंत्र के आन्दोलन को सोशलिस्ट, इण्टरनेशनल के अध्यक्ष विली ब्रांड, राजीव गाँधी, पूर्व प्रधानमंत्री भारत सरकार मधु दंडवते, वित मंत्री भारत सरकार, तथा जापान, और जर्मनी के समाजवादी दलों और ब्रिटन की लेबर पार्टी ने समर्थन दिया।

नेपाल के बहुदलीय आन्दोलन को बाहरी मीडिया का समर्थन मिला था। आल इण्डिया रेडियो, दूरदर्शन, बी.बी.सी., वाइस ऑफ अमेरिका, मास्को रेडियो, ने नेपाल के आन्दोलन को अपने प्रसारण में प्राथमिकता दी। इस प्रकार नेपाल के लोकतांत्रिक आन्दोलन को अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया ने नैतिक समर्थन दिया। भारत के 207 सांसदों ने संयुक्त वक्तव्य देकर लोकतंत्र के पक्ष में समर्थन व्यक्त किया। जिसमें पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 चन्द्रशेखर (जनता दल), सुब्रामणयम स्वामी जनता पार्टी, राम धन (जन मोर्चा),यशवन्त सिंहा,(जनता दल), ए0आर0 अतुले (कांग्रेस आई0), और श्री किरपाल सिंह स्वतंत्र शामिल थे।लोकतंत्र के पक्ष में हुए जबरदस्त आन्दोलन से प्रभावित राजा ने जेल में बन्द राजनीतिक दलों के नेताओं को वार्ता के लिए 8 अप्रैल 1990 की शाम को आमंत्रित किया। जिसकी सूचना राजा के सचिवालय के माध्यम से जारी की गयी। राजनीतिक दलों के नेताओं से

वार्ता के बाद राजा ने शाम को नेपाली कांग्रेस के कृष्ण प्रसाद भट्टराई को अन्तरिम सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। जिसके फलस्वरुप गठबंधन सरकार संयुक्त वाम मोर्चा के साथ अस्तित्व में आयी।पहला आम चुनाव, जो कि देश में मई 1991 में हुआ था, न केवल आयोग की कर्मठता तथा ईमानदारी को दर्शाता है बल्कि जनतांत्रिक राजनैतिक प्रक्रिया में नेपाली जनता की आस्था को भी प्रकट करता है। अनेक अंतर्राष्ट्रीय निकायों द्वारा जिन्होंने चुनाव का अवलोकन किया था, इसकी निष्पक्षता को सत्यापित किया गया है। हाउस ऑफ रिप्रेजेन्टेटिव की 205 सीटों के लिए चुनाव हुआ था। 65.15 प्रतिशत मतदाताओं ने मतदान किया था। मतदाताओं का यह उच्च प्रतिशत राजनैतिक भागीदारी में जनता की गहरी रूचि को दर्शाता है। अनेक राजनैतिक दलों ने चुनाव में भाग लिया किन्तु जनता ने इस तरह से मतदान किया कि केवल दो पार्टियां ही शक्तिशाली होकर उभरी और इस तरह देश की मिली–जुली राजनीति अराजकता की स्थिति से बच गयी। जनता ने उन लोगों को भी निराश किया जो स्थानीय, गुटीय तथाअधिनायकवादी हितों तथा अतिवाद की वकालत कर रहे थे। चुनावी नतीजों से सम्बन्धित निम्नलिखित तालिका चीजों को स्पष्ट कर देती हैं।

सारणी 2.1

राष्ट्रीय चुनाव परिणाम 1991 की दलीय स्थिति

क्रमांक	पार्टी का नाम	प्राप्त मत (प्रतिशत)	विजयी सीटें
1.	नेपाली कांग्रेस	37.75	110
2.	नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (यू.एम.एल.)	27.98	60
3.	नेपाल डेमोक्रेटिक पार्टी (चांद)	6.56	3
4.	नेपाल डेमोक्रेटिक पार्टी (थापा)	5.38	1
5.	यूनाइटेड पीपुल्स फ्रंट ऑफ नेपाल	4.38	9
6.	नेपाल सद्भावना पार्टी	4.10	6
7.	नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (डेमोक्रेटिक)	2.43	2
8.	नेपाल मजदूर किसान पार्टी	1.2	2
9.	स्वतंत्र उम्मीदवार	4.17	3

स्रोतः चुनाव आयोग, नेपाल 1991

चुनावों के निष्पक्ष संचालन ने देश में जनतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत बनाने में प्रशासनिक तंत्र की कार्यकुशलता को भी स्पष्ट कर दिया। दरअसल, नेपाल में नौकरशाही को कभी भी किसी स्वस्थ प्रशासनिक सिद्धान्त पर संचालित नहीं होने दिया गया था। राजसी शासन के दौरान प्रशासनिक कार्मिकों का भविष्य राजमहल के संरक्षण पर निर्भर रहता था। नौकरशाही अपने कामकाज में न तो स्वतंत्र थी और न ही निष्पक्ष तथा कार्यकुशल थी। परन्तु इस प्रणाली के अन्तर्गत इन पहलुओं पर जोर दिया गया। कार्मिकों की भर्ती, प्रशिक्षण तथा पदोन्नति का काम संविधान में उपबंधित एक स्वतंत्र लोक सेवा आयोग को सौंपा गया तथा प्रशासनिक तंत्र के नवीनीकरण के लिए पर्याप्त उपाय किए गए। यह तमाम व्यवस्थायें एवं प्रावधान यह संकेत देते थे कि लोकतांत्रिक प्रणाली देश में फले–फूलेगी। किन्तु इन संभावनाओं को हकीकत में बदलना अनेक जटिल कारकों पर निर्भर करेगा।राजा की पंचायती व्यवस्था से त्रस्त जनता ने राजनीतिक दलों के साथ लोकतंत्र की स्थापना के लिए आन्दोलन किया।

जनआन्दोलन के बाद राजा ने संबैधानिक राजतंत्र वाली बहुदलीय लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित हुई। राजनीतिक दलों को सत्ता मिलने के बाद वह आपस में ही संघर्ष करते दिखाई देने लगे। यह दल सत्ता लोलुपता की वजह से विरोधी विचारधारा एवं राजतंत्र समर्थक दलों के साथ मिलकर सरकार बनाते नजर आये। सभी राजनीतिक दलों ने अवसरवादिता का परिचय दिया। नेपाली कांग्रेस, नेपाली कम्युनिष्ट पार्टी दोनों ने सरकार बनाने के लिए जनता के संघर्ष के साथ धोखा किया। सन् 1991 के चुनावों के पश्चात गिरिजा प्रसाद कोइराला के नेतृत्व में सरकार बनायी गयी थी।

निष्कर्ष

नेपाल में पंचायत प्रणाली के खिलाफ 1990 के आरम्भिक महीनों में आया लोकप्रिय उभार अन्ततः देश में पूर्ण जनतांत्रिक प्रणाली का स्थापना करने में कामयाब हो गया। आंदोलन के

परिणामस्वरूप, सबसे पहले पंचायत प्रणाली को समाप्त कर दिया गया तथा राजनैतिक पार्टियों पर से प्रतिबन्ध उठा लिया गया। फिर, 19 अप्रैल 1990 को नेपाली कांग्रेस के नेता के. पी. भट्टराई के नेतृत्व में, संयुक्त वामपंथी मोर्चे को शामिल करके, एक अन्तरिम लोकप्रिय सरकार स्थापित की गई।तत्पश्चात् नेपाल में एक जनतांत्रिक व्यवस्था के लिए एक संविधान का मसौदा तैयार करने हेतु एक संविधान सिफारिश आयोग गठित किया गया। इस आयोग द्वारा तैयार किए गए संविधान को राजा द्वारा 9 नवम्बर 1990 को लागू किया गया। संविधान के प्रावधानों के अनुरूप मई 1991 में आम चुनाव कराए गए और उनके परिणामों के आधार पर 29 मई 1991 को नेपाली कांग्रेस के नेता जी. पी. कोइराला ने सरकार बनाई। इस तरह एक अधिनायकवादी व्यवस्था से एक जनतांत्रिक व्यवस्था में संक्रमण हुआ।

संदर्भ सूची

1. अधिकारी, नीरू 1997, *डेमोक्रेटिक मूवमेण्ट एण्ड कांस्टीट्युशनल डेवलेपमेण्ट ऑफनेपाल विद स्पेशल रिफरेन्स टू द ईयर 1990*, अनपब्लिस्ड थीसिस, बी.एच.यू. वाराणसी,।
2. मुनि, एस.डी. 1992, *इण्डिया एण्ड नेपालः चेन्चिंग रिलेशनशिप*, कोणार्क पब्लिकेशन, नई. दिल्ली,।
3. बराल, लोकराज 1993, *प्रोब्लम ऑफ गवर्नेंस*, कोणार्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली,।
4. समाज, 21 जनवरी 1990.
5. मिश्रा, नवीन 1990, *डेमोक्रेशी इन मिडनाइट*, जनकपुर।
6. नेपाली आवाज, 5–12 फरवरी 1990.
7. भट्टराई, दिनेश, खाटीवाड़ा प्रदीप, 1993, *इण्डिया–नेपालः डेमोक्रेसी इन द मेकिंग ऑफ म्युच्युल ट्रस्ट*, निराला पब्लिकेशन, नई दिल्ली,।
8. नेपाल न्यूज, वाल्यूम 19, मई 1, 1990, नं. 6
9. पूर्वोक्त, वाल्यूम, 29, नं. 1, 1990 नं. 18,

10. एच.एम.जी., *द कांस्टीट्युशन ऑफ द किंगडम ऑफ नेपाल, 1990 एण्ड इलेक्ट्रोरल लॉज*, काठमाण्डू।
11. इण्डियन एक्सप्रेस, 6, जून, 1991.
12. साहू, टंकधर, *पॉलिटिक्स एण्ड कान्सिटीट्यूशन चेन्ज इन नेपाल 1962–1963*, (अप्रकाशित) पी.एच.डी., थिसिस, बी.एच.यू., वाराणसी,।
13. वर्मा, आनन्द स्वरुप, 2001, *रोल्पा से डोल्पा, समकालीन तीसरी दुनिया*, नोयडा।

*** डा. आकाश गौतम, पोस्ट–डाक्टोरल फेलो, राजनीति विज्ञान विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ।**

Cite

MLA Dr. Akash, gautam. "नेपाल 1990 : लोकतंत्र की स्थापना के लिये आन्दोलन." S O C R A T E S [Online], 2.1 (2014): 234-242.

APA Dr. Akash, g. (2014). नेपाल 1990 : लोकतंत्र की स्थापना के लिये आन्दोलन. S O C R A T E S, 2(1), 234-242. Retrieved from http://www.socratesjournal.com/index.php/socrates/article/view/62

Chicago Dr. Akash, g. 2014 Mar 28. नेपाल 1990 : लोकतंत्र की स्थापना के लिये आन्दोलन. S O C R A T E S. [Online] 2:1